481 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 41
द्वितीय अंक
सितम्बर 2018

इस अंक में...

14 सम्पादकीय
15 राष्ट्रीय घटनाक्रम
21 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
28 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
35 नवीनतम सामान्य ज्ञान
38 राज्य समाचार
40 खेलकूद
45 फ्रांस दूसरी बार फीफा विश्व कप का विजेता बना
48 रोजगार समाचार
50 सिविल सेवा (मुख्य) परीक्षा, 2018 हेतु कुछ टिप्स—खोजें, समझें और अपनी योजनाओं में शामिल करें
54 युवा प्रतिभाएं
64 स्मरणीय तथ्य
68 विश्व परिदृश्य
73 फोकस—आधुनिक दासता : यत्र-तत्र-सर्वत्र
76 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
79 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
83 बैंकिंग सम्बन्धी लेख—भारतीय बैंकिंग क्षेत्र : संदर्भ और चुनौतियाँ
87 ऐतिहासिक लेख—भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की देन (विरासत) : एक विवेचनात्मक अध्ययन
88 सामयिक लेख—क्या मृत्युदण्ड से रुकेंगे बलात्कार
91 सामाजिक लेख—इच्छा-मृत्यु का अधिकार
93 अंतरिक्ष लेख—कार्टोसैट से सैन्य निरीक्षण क्षमताओं में बड़ा इजाफा होगा
94 संवैधानिक लेख—भारतीय संविधान की मूल संरचना के स्वरूप का परिचय
96 प्रौद्योगिकी लेख—कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी-बिम्ब और प्रतिबिम्ब
99 राष्ट्रीय लेख—पूर्वोत्तर में विकास की चुनौतियाँ
101 जल लेख—भारत में अलवण जल संसाधन एवं उनकी गुणवत्ता
103 सूचना प्रौद्योगिकी लेख—इंटरनेट निरपेक्षता
104 समसामयिक महिला कल्याण लेख—बजट 2018-19 में महिलाओं के लिए प्रावधान
106 पर्यावरणीय लेख—पर्यावरणीय संकट बने प्लास्टिक को लाभदायी पदार्थों में बदलने की जरूरत
108 पर्यावरण लेख—वैश्विक जलवायु परिवर्तन : प्रभाव एवं सम्भावनाएं
111 कृषि लेख—कृषि 2022: किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य
114 सार संग्रह
119 सामान्य अध्ययन—(i) आगामी उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (प्रा.) परीक्षा 2018 हेतु विशेष हल प्रश्न
130 (ii) राष्ट्रीय रक्षा अकादमी व नौसेना अकादमी परीक्षा, 2018
138 (iii) 63वीं बी.पी. एस.सी. (प्रा.) परीक्षा, 2018
149 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
151 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
153 सामान्य जानकारी—(i) जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के बढ़ते चरण—एक दृष्टि में
156 (ii) प्रमुख वैश्विक सूचकांक तथा भारत की स्थिति
159 (iii) श्रव्य एवं दृश्य माध्यमों (ऑडियो-वीडियो) से सम्बन्धित प्रमुख शब्दावली
162 सामयिक तथ्य—भारत 2018 : समसामयिक समुच्चयों का सार
167 तर्कशक्ति—आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित पर्सनेल ऑफीसर (प्रा.) परीक्षा, 2017
172 संख्यात्मक अभियोग्यता—स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया पी.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2017
176 सांख्यिकीय योग्यता—द ओरिएंटल इंश्योरेंस कं. लि. ए.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2017
180 क्या आप जानते हैं ?
181 अपना ज्ञान बढ़ाइए
182 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—वैश्विक स्तर बढ़ता संरक्षणवाद
184 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—470 का परिणाम
185 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—शिक्षा के प्रसार के सापेक्ष गुणवत्ता का ह्रास हुआ है
187 नवीनतम सामान्य ज्ञान
200 खेलकूद
208 अनुक्रमणिका (अगस्त 2017 से जुलाई 2018 तक)

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

सम्पादकीय

धर्म और राजनीति के सम्बन्ध को जानिए

राजनीति का धर्म तो होना चाहिए, परन्तु धर्म के नाम पर राजनीति करने का कोई औचित्य नहीं है.

धर्मनिरपेक्षता शब्द का प्रयोग प्रगतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता का प्रतीक बन गया है. धर्म शब्द को राजनीति के क्षेत्र से बहिष्कृत करने की बात कहना एक फैशन बन गया है. दुर्भाग्य यह है कि इन शब्दों का प्रयोग करने वाले व्यक्तियों में बहुत कम व्यक्ति ऐसे होंगे जो इन शब्दों के सन्दर्भों एवं इनके वास्तविक अर्थों को समझते हों.

भारत के संविधान के अधिकृत हिन्दी अनुवाद में सेक्यूलर शब्द का हिन्दी रूपान्तर 'पंथनिरपेक्ष' दिया गया है, धर्म-निरपेक्ष शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है. पता नहीं, यह शब्द क्योंकर प्रयोग में आने लगा है? सम्भवतः अज्ञानतावश. यदि ऐसा है, तो इसका प्रयोग निषिद्ध किया जाना ही उचित है. धर्मनिरेपक्ष शब्द यदि असंवैधानिक नहीं है, तो वह संविधान समर्थित भी नहीं है. सीधा-सा प्रश्न है कि हमारे राजनीतिक महारथी अधिकांशतः शिक्षित होने के बावजूद संविधान द्वारा समर्थित शब्द 'पंथनिरपेक्ष' शब्द का प्रयोग क्यों नहीं करते हैं?

सम्भवतया इसलिए कि राजनीतिक लाभ-हानि की दृष्टि से पंथ निरपेक्षता उनके लिए सुविधाजनक, नहीं होता. भारतीय जनमानस में 'धर्म' लगभग प्रत्येक व्यक्ति की जीवनशैली का अंक बन चुका है. इसी आधार पर समर्थकों का ध्रुवीकरण होता है.

'धर्म' शब्द शुद्ध भारतीय शब्द है. विभिन्न ग्रन्थों में इसको परिभाषित किया गया है. कहीं भी किसी भी रूप में धर्म के साथ परमात्मा या ईश्वर शब्द का सम्बन्ध नहीं बताया गया है. धर्म के जिन लक्षणों का निरूपण किया गया है, उनके आधार पर धर्म का निकटतम पर्यायवाची शब्द नैतिकता होता है. तब क्या धर्मनिरपेक्ष से तात्पर्य नैतिकता निरपेक्ष समझा जाए? हमारे विचार से 'धर्म-निरपेक्ष' शब्द का यह अर्थ स्वीकार करने के लिए कोई भी तैयार नहीं होगा.

'पंथ' के तीन प्रमुख तत्व होते हैं—कर्मकाण्ड, उपासना काण्ड और ज्ञानकाण्ड—यानी औपचारिकताएँ, ईश्वर या परमात्मा के स्वरूप की चर्चा तथा व्यवहार में नैतिकता का प्रयोग. प्रथम दो विवाद के विषय बनते हैं. नैतिकता का पक्ष प्रायः प्रत्येक पंथ / सम्प्रदाय में समान है. अतएव इसी आधार पर समस्त पंथों की मूलभूत एकता का प्रतिपादन किया जाता है. बिडम्बना यह है कि पंथ के लिए 'धर्म' शब्द अज्ञानवश इतना अधिक प्रचलित हो गया है कि शिक्षित अशिक्षित सब लोग संदर्भ का विचार किए बिना उसका प्रयोग करते हुए देखे जाते हैं. धर्म के नाम पर होने वाले समस्त विवादों एवं प्रचलित भ्रान्तियों का मूल कारण यही है. ध्यातव्य है कि धर्म शब्द का पर्यायवाची शब्द किसी भी भाषा में नहीं है. महत्वपूर्ण ग्रन्थों में—रूसी महिला मैडम हेलेना पैट्रोविना ब्लैवैट्स्की ने अपनी अमर कृति 'Secret Doctrine' में भी धर्म को धर्म ही लिखा है. जिसे हम रिलीजन (Religion) कहते हैं, उसका हिन्दी रूपान्तर पंथ या सम्प्रदाय है.

सेक्यूलर (Secular) शब्द यूरोप के उस आन्दोलन की देन है, जो मध्यकाल में चर्च की अतिअधिकारवादी प्रवृत्ति के विरुद्ध किया गया था. चर्च के अथवा चर्च के अधिकारियों के अधिकारों को नकारने की दृष्टि से, शासन एवं राजनीति से दूर रखने की दृष्टि से Secular Government की परिकल्पना की गई थी. सेक्यूलर Secular शब्द का अर्थ अंग्रेजी के कोशों में इस प्रकार दिया गया है—Concerned with the affairs of this world, worldly, not sacred, not monastic, not ecclesiastical, temporal, profane, religious education, the clergy, priests etc. इसके विलोम स्वरूप लिखे गए हैं—Sceptical of religious truth or opposed to religious education.